

एक म्यूचुअल फंड अपने यूनिटधारकों की बैठक कर रहा है। यह अपने-आप में एक अलग-सी चीज है। यह विचार कैसे आया?

हमें यह विचार वॉरेन बफेट की कंपनी बर्कशायर हैथवे से आया। वे भी अपने शेयरधारकों के साथ वार्षिक आम बैठक (एजीएम) करते हैं। दोनों तरफ से भरोसा जताने का यह अच्छा तरीका है, इसलिए हमें लगा कि यूनिटधारकों के साथ बातचीत करके उन्हें यह भरोसा दिलाये कि हम फंड को कैसे चला रहे हैं। **यूनिटधारकों के साथ बातचीत में आपको उनकी क्या अपेक्षाएँ दिखीं, उन्होंने क्या कहा आपसे?**

यूनिटधारक काफी खुश दिखे, क्योंकि पिछले साल हमारा प्रदर्शन अच्छा रहा। दरअसल हमने पैसा गँवाया नहीं है, बल्कि थोड़ा पैसा बनाया है। पिछले साल बाजार बहुत खराब था, ऐसे में यूनिटधारकों को हमारी रणनीति का यह असर दिखा कि यह फंड बाजार गिरने पर भी मजबूत रहता है। हमने पहले भी यह बात कही है। मगर 2013-17 तक चार साल की अवधि में बाजार में तेजी ही रही थी। उसमें लोगों को हमारी रणनीति समझ नहीं आयी थी। बाजार में गिरावट आने पर लोगों को हमारी रणनीति समझ में आ रही है।

आपके इक्विटी फंड की मूल प्रकृति वैल्यू फंड की है, मले ही नये वर्गीकरण में आपने उसे मल्टी-कैप श्रेणी में रखा है। एक वैल्यू फंड बाजार में गिरावट आने पर निवेशक के पैसे को बचा कर रखने का प्रयास करता है। मगर जब बाजार में तेजी आये तो गोथ फंड अधिक चमकदार लगते हैं। आपको आगे वह समय भी देखना होगा। आप उसकी तैयारी कैसे करेंगे?

हमने 2017 में वैसा समय पहले ही देख लिया है। मुख्य बात है कि गिरावट से सुरक्षा रहनी चाहिए और उचित वृद्धि की आशा। हमें इतना भी जोखिम नहीं लेना है कि 1-2 साल में तो प्रदर्शन शानदार रहे, मगर गिरावट आने पर बहुत ज्यादा नीचे गिर जाये। छोटे-मझोले शेयर जितनी जल्दी ऊपर गये, उतनी जल्दी ही नीचे आये। हमें अपने यूनिटधारकों के लिए निरंतरता के साथ प्रतिफल (रिटर्न) चाहिए और इसके लिए गिरावट से सुरक्षा की रणनीति बहुत अच्छी है। ऐसे में बाजार में बहुत तेजी आयी और किसी फंड ने 25% रिटर्न दिया और हमने 22% रिटर्न दिया, तो मेरे लिए यह चिंता की बात नहीं है। मेरे लिए गिरावट आने पर दूसरों से बेहतर प्रदर्शन करना ज्यादा जरूरी है।

आपके पोर्टफोलियो में विदेशी शेयरों का भी एक हिस्सा है। क्या भारत में अवसर कम हो गये हैं, या विदेशों में भारत की तुलना में अवसर ज्यादा बढ़े हैं?

गिरावट आने पर दूसरों से बेहतर प्रदर्शन करना ज्यादा जरूरी



हाल में पीपीएफएस म्यूचुअल फंड ने दिल्ली में अपने यूनिटधारकों की एजीएम बुलाई, जो भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग में नयी पहल है। एजीएम आयोजित करने की वजह क्या रही, आगे पीपीएफएस की रणनीति क्या रहेगी और आने वाले समय में भारतीय बाजार की चाल कैसी लगती है, इन सब मुद्दों पर पीपीएफएस म्यूचुअल फंड के चेयरमैन एवं सीईओ नील पराग पारिख से बातचीत।

देखिए, भारत की बाजार पूँजी पूरे विश्व की 3-4% है, यानी 96% अवसर भारत के बाहर हैं। वृद्धि दोनों जगह है। जैसे हमारे पोर्टफोलियो में गूगल चलाने वाली कंपनी अल्फाबेट है, जो बहुत तेजी से बढ़ रही है और उचित मूल्यांकन पर भी है। वह सिर्फ अमेरिका में नहीं, बल्कि सभी बढ़ते हुए बाजारों में भी चल रही है। हमारे विदेशी पोर्टफोलियो में मौजूद सभी कंपनियाँ वैश्विक स्तर की हैं, चाहे वह अल्फाबेट हो या फिर आईबीएम, फेसबुक, 3एम और नेस्ले हो।

भारत में अगला एक साल कैसा रहने वाला है?

पिछले 4 साल से बाजार ऊपर ही जा रहा था, इसलिए इसे थोड़ा नीचे तो आना ही था। हमने 2017 के अंत में 30% नकदी रखी थी, क्योंकि हमें अवसर नहीं मिल रहे थे। अब इस साल मूल्यांकन सही होने लगे हैं। यह साल जमा (एकमुल्य) करने के लिए है। यह साल घटनाओं वाला तो होगा ही, क्योंकि चुनाव हैं। इसके अलावा सीमा पर तनाव भी है। ऐसी घटनाएँ चलती रहेंगी। मगर यदि आपको 5 साल यानी लंबी अवधि के लिए निवेश करना है तो यह समय एकदम सही है।

आपने केवल एक इक्विटी फंड चलाया, फिर हाल में एक लिक्विड फंड शुरू किया। एक ही फंड से सभी निवेशकों की जरूरत कैसे पूरी करेंगे?

हमारे फंड का ढाँचा ऐसा है कि जहाँ भी अवसर मिले उसका लाभ हम ले सकते हैं। यह एक मल्टी-कैप फंड है। यह एक शुरुआती निवेशक के लिए भी अच्छा है, क्योंकि वह बाजार में सभी अवसरों का लाभ ले सकता है। यदि आप इक्विटी का जोखिम ले सकते हैं तो हमारा फंड काफी अच्छा है, क्योंकि इसमें जोखिम कम है। अंतरराष्ट्रीय निवेश भी होने के कारण यह फंड शुरुआती और अनुभवी, दोनों तरह के निवेशकों के लिए अच्छा है।

लेकिन जो निवेशक अपनी तरफ से फैसला लेना चाहते हैं कि मुझे कम जोखिम उठाना है या फिर अधिक जोखिम, उनके लिए आपके पास अलग-अलग विकल्प नहीं हैं।

अधिक जोखिम लेना है तो स्मॉलकैप और मिडकैप फंड में निवेश करना चाहिए। वह हमारी रणनीति नहीं है। दरअसल हम रूढ़िवादी निवेशक ही हैं। हम रूढ़िवादी तरीके से ही अपनी संपदा का प्रबंधन करेंगे और हमें जैसे निवेशक ही चाहिए। हमारी यह योजना है कि जो हमारा मुख्य इक्विटी फंड है, वह तो रहेगा ही और साथ में लिक्विड फंड, ईएलएसएस फंड और शायद एक-दो साल में एक डेब्ट फंड शुरू करेंगे। मुझे नहीं लगता कि इन 4 फंड या एक और फंड के बाद हम कुछ करेंगे। मेरे हिसाब से यह निवेशकों की जरूरतों के लिए काफी है।